ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में 19-20 मार्च को 'आदिवासी : समस्याएं एवं संभावनाए' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन, देशभर के मानविज्ञानी करेंगे शिरकत

वर्धा दि. 14 मार्च 2012: वर्धा (महाराष्ट्र) स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 19 एवं 20 मार्च को 'मध्य भारत के आदिवासी : समस्याएं एवं संभावनाए' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। विवि के मानविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठी का उदघाटन विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन की अध्यक्षता में हबीब तनवीर सभागार में किया जाएगा। इस अवसर पर रांची विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रो. कर्मा उरांव बीज वक्तव्य देंगे। संगोष्ठी में देशभर के मानव विज्ञानी 'आदिवासी विकास, नीतियां, आदिवासी सोसायटी और आदिवासी अधिकारों में बदलते परिदृश्य, सामाजिक-आर्थिक और राजनैतिक मुद्दे, आदिवासी समस्याएं' आदि विषयों पर विमर्श करेंगे।

उदघाटन समारोह में संगोष्ठी संयोजक तथा मानव विज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. फरहद मलिक स्वागत वस्तव्य देंगे तथा विवि के कुलसचिव डॉ. के. जी. खामरे धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करेंगे। उदघाटन के पश्चात 'आदिवासी विकास, नीतियां एवं अन्य मुद्दे' विषय पर प्रो. कर्मा उरांव की अध्यक्षता में राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान, हैदराबाद के डॉ. विजय पी. शर्मा एवं एम. श्रीनु बाबू मंतव्य देंगे। इस अवसर पर राष्ट्रीय अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग के पूर्व आयुक्त तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के निवृत्त अधिकारी डॉ. बी. डी. शर्मा विशेष व्याख्यान देंगे।

दि. 19 को प्रथम अकादमिक सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. पी. सी. जोशी, टाटा समाज विज्ञान संस्थान के प्रो. जे. जे. रॉय बर्मन, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल के प्रो. एस. एन. चौधुरी, रायपुर के सामाजिक कार्यकर्ता गौतम बंदोपाध्याय, एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, कोलकाता के अमिताभ सरकार एवं डॉ. समीरा दासगुप्ता तथा प्रो. शेख रहिम मंडल विचार प्रस्तुत करेंगे। दूसरे अकादमिक सत्र में 'आदिवासी सोसायटी और

आदिवासी अधिकारों में बदलते परिदृश्य' विषय पर प्रो. पी. सी. जोशी की अध्यक्षता में पुणे विश्वविद्यालय के मानवविज्ञान विभाग के प्रो. राम गंभीर तथा एम. श्रीनु बाबू विमर्श करेंगे। दि. 20 मार्च को तीसरे सत्र में सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक मुद्दे विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस. एन. चौधुरी करेंगे। चौथे सत्र में आदिवासी समस्याएं विषय पर चर्चा होगी। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन की अध्यक्षता में 20 मार्च को अपराहन 3.00 बजे होगा तथा उनके द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे। इस संगोष्ठी में विवि के स्त्री अध्ययन विभाग की प्रो. इलिना सेन, हरिसिंह गौर सागर विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश के प्रो. सी. साहु,प्रो. ए. पी. सिंह, एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, कोलकाता के डॉ. पदनाभम, शम्पा गंगोपाध्याय, डॉ. दिवाकर सिंह राजपुत, डॉ. बी. एन. सहाय, डॉ. एस. एन. मुण्डा, डॉ. प्रभात सिंह, लोक नाथ सोनी, राजेश गौतम, डॉ. के. एन. शर्मा, जितेंद्र प्रेमी, डॉ. एल. पी. पटेरिया, डॉ. ए. के. सिन्हा, डॉ. जयश्री राठोर, शिवाजी संभाजी शिंदे, नागपुर विश्वविद्यालय के प्रो. प्रदीप मेश्राम सहित देशभर के 100 से भी अधिक मानवविज्ञानी, विशेषज्ञ एवं शोधार्थी शोधपत्र प्रस्तुत करेंगे।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी